मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । दुनियाँ के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है । दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 31 जनवरी 1991 50 पैसे

पूंजीवादी सरगनों का झगड़ा

थॉमसन प्रेस

अपने अगस्त 90 के अंक में हमने थॉमसन प्रेस में मजदूरों के बीच गुटबाजी का मुख्य कारण मैनेजमेंट की दो पट्ठों की पीठ पर हाथ रखने की पालिसी को बताया था। वह गलत मूल्यांकन था। हमने तब घटनाओं को सामान्यतः थॉमसन प्रेस के दायरे में ही देखा था। थॉमसन प्रेस-इन्डिया टुडे-न्यूज ट्रैक मैनेजमेंटों की तालमेल और यहां की पूंजीवादी राजनीति में उनके दखल पर हमने ध्यान नहीं दिया। इस वजह से हमसे वह गलती हुई। इधर 6 दिसम्बर 90 को उठा-पटक ने मामले को काफी स्पष्ट कर दिया है। पर फिर भी, थॉमसन प्रेस के मजदूर अब भी अपनी फैक्ट्री के दायरे में घटनाक्रम को समझने की कोशिश कर रहे हैं। इससे हो यह रहा है कि पूंजीवादी सरगनों के झगड़े में यह मजदूर मोहरे बन रहे हैं—सौ—पचास मजदूर देवीलाल—चौटाला के लिये परेशान हो रहे हैं तो हजार—डेढ़ हजार मजदूर थॉमसन मैनेजमेंट के लिये कष्ट उठा रहे हैं। यह मामला थॉमसन मजदूरों के लिये तो महत्वपूर्ण है ही, अन्य मजदूरों के लिए भी इसमें काफी कुछ सीखने के लिए है इसलिए आइये मसले पर कुछ विस्तार से विचार करें।

पूंजीवादी जनतन्त्र में बड़े पूंजीवादी अखबारों-पत्रिकाओं का अच्छा खासा प्रभाव होता है। नवम्बर 89 के चुनावों के साथ ही यहां पूंजीवादी संसदीय राजनीति के नाटक से नौटंकी की स्थिति में पहुंच जाने के बाद तो यह और भी बढ़ गया। अपनी-अपनी छवि के चक्कर में नेता लोग जम्हूरे बने और बड़े पूंजीवादी अखबार—पत्रिकायें सम्पादकीयों में भारत चाहता है—देश कहता है—इन्डिया डिमान्ड्स जैसे फिकरों को इस्तेमाल करते हुए नेताओं/पार्टियों को अपनी इच्छायें डिक्टेट करने लगे। ऐसे माहौल में काफी पापड़ बेल कर नोट छापने की केन्द्रीय मशीन में हिस्सेदार बने और उस मशीन पर एकछत्र कब्जे के लिए हाथ-पैर मार रहे देवीलाल-चौटाला पर कई बड़े पूंजीवादी अखबारों-पत्रिकाओं ने हमले शुरू कर दिए। महम के चुनावों के वक्त इन हमलों में गर्मी आई। देवीलाल—चौटाला ने भी जवाबी हमले किये। भाषणों में अखबारों को कोसना जवाबी कार्रवाही का एक हिस्सा था।

थॉमसन प्रेस-इन्डिया टुडे-न्यूजट्रैक के कर्ता-धर्ता देवीलाल-चौटाला पर हमला करने वालों की अगुआ कतार में थे। इन्डिया टुडे द्वारा देवीलाल को धृतराष्ट्र कहना, न्यूजट्रैक वीडियो द्वारा महम को ले कर चौटाला पर हमले के लिए सामग्री जुटाना व्यापक चर्चा के विषय बने। इन हमलावरों की प्रमुख इकाई फरीदाबाद में थॉमसन प्रेस है—इन्डिया टुडे के अंग्रेजी व हिन्दी अंक भी इसी प्रेस में छपते हैं। और देवीलाल-चौटाला का हरियाणा में सरकारी तन्त्र पर नियन्त्रण तथा एल. एम. एस. यूनियन नाम वाला लूट-मार संगठन है। इसलिए देवीलाल-चौटाला के लिए अपने इस विरोधी के खिलाफ हरियाणा में कदम उठाना आसान था। इन वजहों से देवीलाल चौटाला और थॉमसन प्रेस-इन्डिया टुडे—न्यूजट्रैक के कर्ता-धर्ताओं के बीच झगड़ा जुलाई 90 में थॉमसन प्रेस के मजदूरों के बीच मार-पीट के रूप में प्रकट हुआ।

87 में जनरल मैनेजर बदलने के साथ ही उससे जुड़े बदमाश यूनियन लीडर को थॉमसन मैनेजमेंट ने भगाया। उसके स्थान पर एच एम एस लीडर आया। इससे शुरू में मजदूरों ने कुछ राहत महसूस की और एच. एम. एस. लीडर को मैनेजमेंट द्वारा खुलेआम दो हजार रुपए मन्थली पर भी मजदूरों ने कोई एतराज नहीं किया। लेकिन नये यूनियन लीडरों द्वारा कम्पनी की "गड़बड़ा रही स्थिति को सम्भलवाने" के नाम पर मजदूरों को मिल रही करीब तीस लाख रुपये सालाना की सहूलियतें बन्द करने में मैनेजमेंट को सहयोग देने, वर्क लोड बढ़वाने, स्लो डाउन के बदले में 72 घन्टे मुफ्त में काम करवाने आदि की वजह से थॉमसन मजदूरों में असन्तोष बढ़ने लगा। और मौका ऐसा बना कि इसी समय देवीलाल-चौटाला ने

(शेष अगले पृष्ठ पर)

अमेटीप मशीन टूल्स

14/7 मथुरा रोड स्थित अमेटीप मशीन टूल्स भारत में पावर प्रेस बनाने वाली प्रमुख कम्पनियों में है। दस टन से लेकर एक हजार टन तक की पावर प्रेस यहां बनती हैं। फरीदाबाद की इस पुरानी फैक्ट्री में इस समय 500 लोग काम करते हैं। 17 दिसम्बर 90 को मैनेजमेंट ने फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी—28 दिसम्बर को प्रेस के लिये यह लेख तैयार करते समय लाक आउट जारी था। अमेटीप की हाल की घटनाओं पर आइये एक नजर डालें।

यूं तो यूनियन लीडरों ने अमेटीप मैनेजमेंट को लिखकर दिया हुआ था कि मार्च 91 से पहले वे मैनेजमेंट से कोई मांग नहीं करेंगे पर नये जनरल एग्रीमेन्ट का समय आने पर मजदूरों के दबाव की वजह से उन्हें जुलाई 90 में मैनेजमेन्ट को मांग-पत्र देना पड़ा। मैनेजमेन्ट ने मांग-पत्र पर बात करने से इन्कार कर दिया। इन्कार की एक वजह मैनेजमेन्ट में धड़ेबन्दी भी है—अमेटीप मैनेजमेन्ट से जुड़े कुछ लोगों ने बल्लभगढ़ और धारूहेड़ा में पावर प्रेस बनाने की फैक्ट्रियाँ अलग से खोल ली है।

अपनी माँगों पर जोर देने के लिए अमेटीप मजदूरों ने कदम उठाने शुरू किये। सितम्बर आते-आते मैनेजमेन्ट को प्रोडक्शन पर पड़ रहा असर महसूस होने लगा। और मजदूरों का दबाव बढ़ता गया। तब……

फरीदाबाद के पुलिस सुपरिटेंडेन्ट के साथ बैठ कर अमेटीप मैनेजमेन्ट एच एम एस के बड़े लीडरों और अमेटीप यूनियन लीडरों ने 13 दिसम्बर 90 को एक समझौते पर दस्तखत किये। जनरल एग्रीमेन्ट वाला माँग-पत्र रद्दी की टोकरी में डालकर साहब लोगों और बिचौलियों ने प्रोडक्शन से लिंक एक जाल अमेटीप मजदूरों के लिए बिछाया।

अमेटीप मशीन टूल्स के मजदूरों ने 13 दिसम्बर के समझौते को ठुकरा दिया—एच एम एस के बड़े लीडर और अमेटीप यूनियन लीडर अपने समझौते का गुणगान करते रहे पर मजदूरों ने उनकी एक नहीं सुनी। अमेटीप मजदूरों ने जनरल एग्रीमेन्ट के मांग-पत्र पर बात करने पर जोर दिया। अपने हितों के प्रति मजदूरों की इस चौकसी ने एस पी मैनेजमेन्ट-बिचौलियों की तिकड़म को लंगड़ा कर दिया।

इन हालात की वजह से मैनेजमेन्ट ने 17 दिसम्बर से तालाबन्दी की है ताकि मजदूरों को झुकाया जा सके। और मैनेजमेन्ट की मदद करने लायक बनने के लिए बिचौलियों ने गुन्डागर्दी के खिलाफ चिल्ल-पों आदि शुरू की है ताकि अमेटीप मजदूरों में कुछ साख बना सकें।

बिचौलियों की कोर्ट-कचहरी वाली भाग-दौड़, साहबों-मन्त्रियों को अर्जियां और फैक्ट्री गेटों पर धूनी रमाना मैनेजमेन्ट के हमलों से मुकाबले के लिए मजदूरों के कारगर औजार नहीं है। अमेटीप मजदूरों को मैनेजमेन्ट के खिलाफ अपनी ताकत बढ़ाने के सवाल पर विचार करना चाहिये। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर अमेटीप मजदूरों को हर रोज जलूस निकालने पर गौर करना चाहिए। ऐसे जलूस और अमेटीप मजदूरों के परिवारों का इन जलूसों में शामिल होना, अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों का इन जलूसों में शामिल होना अमेटीप मैनेजमेन्ट और उसके सहायक डी एल सी—एस पी—डी सी वाले तन्त्र के खिलाफ अमेटीप मजदूरों की ताकत बढ़ायेगा।

चौकसी, मजदूरों की चौकसी जरूरी है। अमेटीप मजदूरों को याद रखना चाहिए कि

1. अमेटीप मैनेजमेंट ने 1987 में एम टी ए के सौ मजदूरों को निकाल दिया। 2. एच एम एस ने 1983 में फिक इन्डिया में एस पी को पंच बनाकर वहां के लड़ाकू मजदूरों का हिसाब करवाया और साथ ही अतुल ग्लास के मजदूरों का कचूमर निकलवाया।

अमेटीप मशीन टूल्स के मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे। -o-

---

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

मार्क्सवाद
(छठी किस्त)

इस अंक में हम समाजवाद/साम्यवाद का अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करेंगे। समाजवाद को हम साम्यवाद के प्रथम चरण के रूप में ले रहे हैं।

मार्क्सवाद के मुताबिक समाजवाद/साम्यवाद की दो मूल खामियतें हैं। साम्यवाद वह समाज व्यवस्था है जिसमें जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की बहुतायत होगी। और, समाजवाद में पुलिस-फौज वाला दमनतन्त्र नहीं होता तथा मजदूरों का शोषण नहीं होता—पूर्ण साम्यवाद में दमन व शोषण पूरी तरह खत्म हो जायेगा। आइये इन पर कुछ विस्तार से चर्चा करें।

रोटी और सुरक्षा की अब तक की समाज व्यवस्थाओं में तंगी रही है। साम्यवाद में समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए रोटी-कपड़ा-मकान—सुरक्षा की तंगी नहीं होगी—कम्युनिस्ट समाज में जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की बहुतायत होगी। जाहिर है, साम्यवादी समाज की स्थापना लोगों की मर्जी का सवाल नहीं है। मानव श्रम-शक्ति को उत्पादकता एक निश्चित स्तर को पार करने के पश्चात ही सब मानवों के जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पर्याप्त पूर्ति कर सकती है। कन्द-मूल बटोरने, शिकार, पशुपालन और खेती की प्रमुखता वाले लम्बे दौर में मानव श्रम-शक्ति ने वह स्तर हासिल नहीं किया था। हमारे वे पुरखे साम्यवाद की स्थापना नहीं कर सकते थे। भाप-कोयले वाली मशीनरी के इस्तेमाल के साथ स्थापित हुये पूंजीवाद में ही मानव श्रम-शक्ति इतनी विकसित हुई है कि सब मानवों के लिए बेहतर जीवन उपलब्ध हो सकता है। हां, इसके लिए दमन-शोषण पर आधारित पूंजीवाद को उखाड़ कर साम्यवाद की स्थापना जरूरी है। जिक्र कर दें, समाजवाद/साम्यवाद साधुवाद अथवा समतावाद से क्वालिटी में भिन्न है।

आइये अब दमन-शोषण वाले पहलू को लें। चूंकि समाज का एक छोटा हिस्सा अब तक समाज के दो बड़े हिस्से की मेहनत पर मौज-मस्ती करता आया है, शोषितों को दबाने के लिए उसे पुलिस-फौज-जेल-कचहरी वाला तन्त्र विकसित करना पड़ा है। लूट-खसोट वाली व्यवस्था में चन्द लोगों का हथियारों पर एकाधिकार तथा आम लोगों को निहत्था रखना आवश्यक होता है। अतः जब शोषित-पीड़ित मजदूर अपनी मुक्ति के लिए उठते हैं तब पहला काम वे यह करते हैं कि हथियारबन्द होते हैं और दूसरा काम यह करते हैं कि पुलिस-फौज को जबरन भंग कर देते हैं। और चूंकि इसके बाद आरम्भ में मुट्ठी-भर पूंजी के नुमाइन्दों का दमन आवश्यक होता है इसलिये आम मजदूरों का हथियार बन्द रहना जरूरी होता है। पूर्ण साम्यवाद की स्थापना के साथ समाज के किसी भी हिस्से के दमन की आवश्यकता समाप्त हो जायेगी इसलिए आबादी के विशेष हिस्से के हथियारबन्द रहने की जरूरत भी खत्म हो जायेगी। इस प्रकार समाजवाद वह दौर है जब पुलिस—फौज भंग कर दी जाती है और आम मजदूर हथियार—बन्द रहते हैं। रूस-चीन-पूर्वी यूरोप में पुलिस-फौज के तन्त्र का दनदनाना और आम मजदूरों का वहां निहत्था होना साफ जाहिर करता है कि वहां समाजवाद नहीं था।

अपनी मुक्ति के लिये मजदूरों द्वारा अब तक किये गए दो महान प्रयासों का जिक्र कर दें। 1871 में पेरिस कम्यून में आम मजदूर हथियारबन्द हुये और उन्होंने पुलिस-फौज को भंग कर दिया। पर नये सिरे से संगठित पूंजीवादी फौजों ने पेरिस कम्यून को खून में डुबो दिया। 1917 में रूस में हथियारबन्द मजदूरों ने सोवियतें बनाई और अक्टूबर माह में पुलिस-फौज को भंग कर दिया। पर जल्दी ही लाल फौज के नाम से नए सिरे से फौज संगठित की गई। तथा पुचकार कर मजदूरों से हथियार रखवाये गए—सोवियतें पतित हो कर पूंजीवाद की पुनः स्थापना के लिए आड़ बनीं।

यह याद रखना जरूरी है कि पूंजी एक सामाजिक सम्बन्ध है। मजदूर लगा कर मंडी के लिए उत्पादन पूंजी का सार है। इतना ही नहीं, पूंजीवादी उत्पादन हर रोज मजदूरों को मजदूरों के तौर पर तथा पूंजी के नुमाइन्दों को पूंजी के नुमाइन्दों के तौर पर पैदा करता है। फौज-पुलिस-नौकरशाही-अदालतें इस सम्बन्ध को कायम रखती हैं। लाठी-गोली-जेल-प्रचार इस सम्बन्ध को कायम रखने के कुछ ठोस तरीके हैं। इसलिए पुलिस-फौज वाले तन्त्र को चकनाचूर किया जाना और चीजों का मन्डी में बिक्री के लिए नहीं बल्कि मानव जरूरतों को पूरा करने के वास्ते उत्पादन समाजवाद/साम्यवाद के लिए आवश्यक कदम है।

अगले अंक में हम इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या पुनः शुरू करेंगे।

[जारी] —ओ

खांसी

खांसी की दवा खरीदने जा रहे हैं ? ठहरिये क्या आप जानते हैं कि—

★ **खांसी कभी-कभी शरीर के लिए अच्छी भी होती है !**

★ **दवा पी कर खांसी को दबाने से शरीर के लिए नुकसानदायक चीजें बाहर निकल नहीं पाती !**

★ **बाजार में मिलने वाली कफ सिरप में से अधिकतर दवाइयां सिर्फ फालतू ही नहीं, बल्कि हमारे शरीर के लिए नुकसानदायक भी है।**

★ **खांसी की सही दवा सिर्फ एक है, जो अक्सर बाजार में मिलती ही नहीं !**

खांसी अपने आप में कोई रोग नहीं है, यह दूसरे कई रोगों का लक्षण है जो गले, फेफड़ों, श्वास-नली या दिल पर प्रभाव डालते हैं।

असली में खांसी हमारी श्वसन प्रणाली को स्वच्छ रखने और बलगम, रोग जीवाणु आदि से छुटकारा पाने का शरीर का एक प्राकृतिक ढंग है।

भिलाई स्टील की लोहा खदानों में संघर्ष में शहीद हुए मजदूरों की याद में बनाए गए शहीद अस्पताल द्वारा प्रकाशित पुस्तिका, "खांसी के बारे में सही जानकारी" में से हमने ऊपर दी हुई सामग्री ली है। शहीद अस्पताल ने "बुखार के बारे में सही जानकारी" व अन्य पुस्तिकायें भी छापी हैं। इनमें से कुछ किताबें हमारे पास मजदूर लाइब्रेरी में है। इन किताबों को दो रुपये प्रति पुस्तक के हिसाब से मनिआर्डर भेज कर मंगा सकते है। पता है— शहीद अस्पताल पोस्ट—दल्ली राजहरा दुर्ग—491228

—0—

(प्रथम पेज से जारी—)

अपने लूट-मार संगठन का थॉमसन प्रेस में दबदबा कायम करने की पहल की। इसके लिए वे 87 में वहाँ से हटाये जाने के बाद अपना धन्धा कर रहे बदमाश को एल एम एस लीडर बना कर आगे लाये। एच एम एस लीडर से असन्तुष्ट होने के बावजूद थांमसन के अधिकतर मजदूर पुराने बदमाश के साथ लगने को तैयार नहीं हुए पर कुछ मजदूर उसके चक्कर में आ ही गए। तब दबदबे के लिए जुलाई 90 से मार-पीट का सिलसिला शुरू हुआ। इस प्रकार देवीलाल-चौटाला बनाम थॉमसन प्रेस-इन्डिया टुडे न्यूजट्रैक के कर्ता-धर्ताओं का झगड़ा एल एम एस और एच एम एस वाले बिचौलियों के माध्यम से मजदूरों के बीच झगड़े में बदल दिया गया।

यह झगड़ा आड़ा-तिरछा चल ही रहा था कि अगस्त में सत्ता के केन्द्र से बेदखल हुये देवीलाल-चौटाला नवम्बर में फिर सत्ता के केन्द्र में पहुच गए। तब थॉमसन प्रेस-इन्डिया टुडे-न्यूजट्रैक पर अंकुश/नियन्त्रण की देवीलाल-चौटाला की कोशिशें तेज हो गई। इस सिलसिले में 6 दिसम्बर को सुबह एल एम एस ने थॉमसन प्रेस के गेट पर अपना झन्डा गाड़ दिया।

चौटाला और उसके आदमियों द्वारा दबदबे से वसूली से फरीदाबाद की मैनेजमेन्टें परेशान हैं। एस्कोर्टस मैनेजमेंट को तो यह भी भय हुआ कि थांमसन प्रेस के बाद चौटाला एस्कोर्टस पर भी एल एम एस का झन्डा लगवा सकता है—इसके लिये चौटाला के पास फोर्ड प्लांट का निकाला हुआ एस्कोर्टस का एक तेजतर्रार लीडर भी है। और एस्कोर्टस पर कब्जे के लिए 1983 में नन्दा—स्वराजपाल के बीच झगड़े में खुलकर नन्दा मैनेजमेंट का साथ देने तथा एस्कोर्टस मैनेजमेंट का साथ देने तथा एस्कोर्टस मजदूरों पर लगातार वर्क लोड बढ़ाने वाले एग्रीमेंट कर एस्कोर्टस की नन्दा मैनेजमेंट के अति प्रिय बने एच एम एस लीडर को तो अपना धन्धा चौपट होता लगा—देवीलाल की पूंछ रहे फरीदाबाद के इस प्रमुख एच एम एस लीडर ने तब जा कर देवीलाल को छोड़ जनता दल का पल्लू पकड़ा। इस प्रकार थॉमसन मैनेजमेंट की अगुवाई में देवीलाल-चौटाला के खिलाफ नई मोर्चाबन्दी के हालात बने।

फरीदाबाद इन्डस्ट्रीज ऐसोसियेशन ने एस पी डी के सामने देवीलाल-चौटाला के खिलाफ थांमसन मैनेजमेंट को अपने समर्थन की बात स्पष्ट कर दी—देवीलाल-चौटाला को सलाम ठोंकने वाले ऐस पी—डी सी की हलवा-पूरी मैनेजमेन्टों के इस प्रमुख गठबन्धन से ही आती हैं और फिर ऐस्कोर्टस मैनेजमेंट ने 6 दिसम्बर को थांमसन प्रेस पर एल एम एस का झन्डा लगाने के खिलाफ फरीदाबाद में एस्कोर्टस के सब प्लांटों में 6 दिसम्बर की फस्ट शिफ्ट में "हड़ताल" करवा दी। इस सब की वजह से, लगता है कि एस पी-डी सी का इशारा हुआ और 6 दिसम्बर को ही दोपहर दो बजे एच एम एस ने थांमसन प्रेस गेट से एल एम एस का झन्डा उखाड़ दिया। पुलिस ने फूं फाँ मात्र की। हाँ, पुराने बदमाश की वापसी के विरोधी थॉमसन मजदूरों ने अपने गुस्से का इजहार अवश्य किया। एस पी-डी सी ने देवीलाल-चौटाला को अपनी वफादारी दिखाने के लिये 6 दिसंबर रात थॉमसन गेट से एच एम एस का झन्डा फड़वा दिया।

देवीलाल-चौटाला पर अंकुश लगाने के लिये उनके विरोधी पूंजीवादी गिरोह ने और भी कदम उठाये। एच एम एस लीडरों ने थांमसन गेट पर जनता दल के केन्द्रीय लीडरों की सभा कर डाली। इस सब का यह असर हुआ कि देवीलाल-चौटाला कुछ ठन्डे पड़े गये।

ऊपर दी हुई बातों पर थांमसन प्रेस के मजदूरों को विचार करना चाहिये। इस या उस यूनियन का कह कर थॉमसन प्रेस के मजदूरों का एक-दूसरे पर हमलों में भागीदार बनना पूंजीवादी सरगनों के झगड़े में मोहरे बनना है।

-X-

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गां. मेमो. न. से मुद्रित